जैतून के वृक्ष का दृष्टांत (याकूब 5)

प्रथम भेंट मसीह के समय से पहले (पद 3-14)	द्वितीय भेंट मसीह का समय (पद 15-28)	तीसरी भेंट महान धर्मत्याग (पद 29-49)	चौथी भेंट सुसमाचार की पुनास्थापना (पद 50-70)	सहस्राब्दी (पद 76-77)
परमेश्वर प्राचीन इस्राएल के धर्मत्याग को देखता है। वह पश्चाताप करवाने के लिये भविष्यवक्ताओं को भेजता है, लेकिन कुछ लोग सुनते हैं वह दुष्टों को नष्ट करने की अनुमति देता है और अन्यजातियों को शामिल करता है। धर्मी इस्राएल की शाखाएं विश्वभर में बिखर जाती हैं।	जैसे मसीह का गिरजा फैलता है, इस्राएल और बिखरी हुई बहुत सी शाखाएं अच्छे फल उत्पन्न करते हैं।	सारे फल भ्रष्ट हो जाते हैं, जिन में वे शाखाएं भी शामिल हैं जो बिखर गई थी।	बिखरा हुआ इस्राएल एकत्रित किया जाता है, और सुसमाचार संपूर्ण संसार में फैलाया जाता है। जब धार्मिकता बढ़ती है, तो दुष्टों को नष्ट किया जाता है ताकि कोई दुष्टता बाकी न रहे (यीशु मसीह का द्वितीय आगमन)।	धार्मिकता की जीत होती है। जब संसार में बुराई फिर से आती है, तो परमेश्वर धर्मी को दुष्ट से अलग करता और पृथ्वी को अग्नी से शुद्ध करता है।
पालतू जैतून का वृक्ष (इस्राएल) सड़ने लगा है (पद 3-4)। स्वामी इसकी छंटाई करता और खाद डालता है; कुछ नई शाखाएं फूट निकलती हैं, लेकिन मुख्य शाखा फिर भी सड़ रही है (पद 4-6)	अच्छे फल (पद 15-18)	बुरे फल, लेकिन जड़ें अभी भी अच्छी हैं (पद 29-37)	बुरी शाखाओं को जला दिया जाता है (पद 58, 65-66)	सारे वृक्ष एक से हो गए हैं और प्राकृतिक फल देते हैं (पद 74-76)
मुख्य शाखाओं को काट दिया जाता है, और जंगली शाखाओं की कलम लगाई जाती है; कोमल शाखाओं को छिपा दिया जाता है (पद 7-14)			मूल वृक्ष की शाखाओं की कलम बिखरे हुए वृक्षों में लगाई जाती है (पद 54-56)	अच्छे फलों को एकत्रित किया जाएगा और बगीचे को जला दिया जाएगा (पद 77)
सड़ी हुई शाखाओं को जला दिया जाता है (पद 7, 9)	खराब जमीन, अच्छे फल (पद 20-22)	भ्रष्ट फल (पद 39, 46)	बिखरे हुए वृक्षों की शाखाओं की कलम वापस मूल वृक्ष में लगाई जाती है (पद 52-53)	
	खराब जगह, अच्छे फल (पद 23)	भ्रष्ट फल (पद 39, 46)		
जंगली जैतून के वृक्ष (अन्यजातियां; पद 7, 9)	फल (पद 24; शाखा फिर से नहीं बताई जाती है)			
	अच्छी जगह, अच्छे और बुरे फल (पद 25)	भ्रष्ट फल (पद 39, 46)		